www.thearyasamaj.org

वर्ष-१३ अंक-४
२७ दिसंबर २०१६

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल 32/2015-17
एक प्रति- २०.०० रु.

ओ३म्

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

www.thearyasamaj.org

एक दृष्टि में आर्य समाज

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक-रवि

मासिक

वर्ष-१३ अंक-४

२७ दिसंबर २०१६

(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३११५

विक्रम संवत् २०७१

दयानन्दाब्द १८४

सलाहकार मण्डल

राजेन्द्र व्यास

पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'

डॉ. रामलाल प्रजापति

वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक

श्री इन्द्रप्रकाश गांधी

कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

सम्पादक

प्रकाश आर्य

फोन: ०७३२४२२६५६६

सह-सपादक

मुकेश कुमार यादव

फोन: ९८२६१८३०९५

सदस्यता

एक प्रति- २०-०० रू.

वार्षिक-२००-०० रू.

आजीवन-१०००-०० रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ २ एवं ३	५०० रू.
पूर्ण पृष्ठ (अंदर)	-४००रू
आधा पृष्ठ (अंदर का)	२५० रू.
चौथाई पृष्ठ	१५० रु

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ
1.	छोटी सी असुविधा फिर लाभ ही लाभ..........	4
2.	वेद वाणी..	6
3.	अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द.....................	7
4.	एक और स्वतंन्त्रता संग्राम जरूरी है.............	9
5.	स्वाध्याय पत्राचार पाठ्यक्रम प्रारूप...............	11
6.	देश के पूर्वोत्तर क्षेत्र (आसाम, नागालैंड).......	13
7.	7 दिवसीय ऋग्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न..........	18
8.	मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा	19
9.	वेद प्रचार कार्यक्रम..................................	23
10.	गुरूकुल होशंगाबाद का 105वां	24
11.	पांच दिवसीय वेद प्रचार सम्पन्न..................	26

जनवरी माह के पर्व त्यौहार एवं जयंती

१	ईस्वी सन् प्रारंभ (नववर्ष)
५	गुरूगोविंद सिंह जयंती
१३	लोहड़ी उत्सव
१४	मकर संक्रांति पर्व
२१	भीष्म पितामह जयंती
४	लुई ब्रेल जयंती
१०	विश्व हिन्दी दिवस
१२	स्वामी विवेकानन्द जयंती, राष्ट्रीय युवा दिवस
१५	थल सेना दिवस
२३	नेताजी सुभाषचंद्र बोस जयंती
२८	लाल लाजपतराय जयंती
३०	महात्मा गांधी पुण्य तिथि, शहीद स्मृति दिवस

www.thearyasamaj.org

छोटी सी असुविधा - फिर लाभ ही लाभ !

यत्तदग्रे विषमिव परिणामे अमृतोऽपमम्।।

प्रारंभ में कुछ बातें विष के समान लगती हैं किन्तु बाद में वे अतृत तुल्य होती हैं।

मोदी सरकार ने 1000–500 के नोटों पर राष्ट्र की स्थिति को ध्यान में रखते हुए प्रतिबन्ध लगा दिया। किन्तु इस घो णा के विरूद्ध जिसे हम हमारी राजनैतिक मजबूरियां कहें, स्वार्थ कहें या मोदी सरकार का विरोध करना, परम नैतिक कर्तव्य मानें इस कारण इसका विरोध किया जा रहा है।

असल में एक कहावत है बैठा बाणिया क्या करे, इधर का सामान उधर धरे। कुछ काम नही तो अपने होने का एहसास समाज को दिलाने के लिए कुछ तो करना होगा। अन्यथा कुछ चिल्ला पुकार नहीं करेगें, जनता के रहनुमा बनने का ढ़ोंग नहीं करेगें, घड़ियाली आंसू नहीं बहायेगें तो समाज से उनके अस्तित्व की पहचान ही खो जाने का भय है।

हसी और आश्चर्य तो तब होता है जब वे लोग जिनके पास समय था, सत्ता थी उन्होंने वर्षों में कुछ नहीं किया वे कुछ दिन की सरकार से हिसाब मांगते हैं। कौओं ने एक सफेद कबूतर पर लगे कुछ काले छींटें को देखकर उसका मजाक उड़ाया, कबूतर ने उत्तर देकर कहा भाई तू मेरे कुछ काले छींटों को देखकर हंसी उड़ा रहा है जरा अपनी ओर तो देख तू तो पूरा ही काला है। वही स्थिति कौओ के रूप में इस घोषणा से पीड़ित काले धन वालों व अन्य राजनैतिक दलों की है।

इन नोटों के बन्द होने की विशेष चिन्ता गरीब या मध्यम वर्ग को नहीं है। हॉ, कुछ परेशानी जो अस्थायी है, रूपयों की प्राप्ति की उससे कुछ परेशानी बढ़ी है। वास्तव में इन 1000–500 के नोट बन्द होने का उनको सन्ताप सता रहा है जिन्होंने 2 नम्बर, 4 नम्बर से संजोकर 1000–500 के बड़ी संख्या में रूपए रख रखे थे। जबकि इस नोट बन्दी करने के पूर्व कई माह तक काला धन जमा कराकर सरकार से विशेष छूट की सूचना दी जा रही थी। आज इस घोषणा से कितना लाभ देश को हुआ, इसका विश्लेषण विरोधी नहीं करते। इन नोटों से देश की बर्बादी, आतंकवाद, नक्सली और नकली नोटों की बाहर से बड़ी तादाद में आने से हो रही थी, वह रूक गई। अनेक नक्सलवादियों को नोट बन्दी के कारण आर्थिक कठिनाईयां उठाना पड़ी, उनका साहस टूटने लगा और इस कारण उन्होंने बड़ी संख्या में आत्म समर्पण किया।

नक्सलवादी, आज अपंग से हो रहे हैं, कश्मीर में पत्थर फेंकना बन्द हो गया, वहां किशोर व नवयुवकों द्वारा (1000–500) की नोट पर मजदूरी से फेके जाते थे, नकली नोटों के चलन से देश की अर्थ व्यवस्था को होने वाली बहुत बड़ी

www.thearyasamaj.org

क्षति से राहत मिली। अरबों रूपया बैंकों में जो छिपा हुआ था जमा हुआ। यह सब राष्ट्रहित कार्यों की ओर कोई बहस विपक्षी नहीं करते। क्योंकि उनका

जन्मसिद्ध अधिकार है उनके अतिरिक्त अन्य कोई भी कार्य, कितना भी अच्छा कार्य चाहे बाबा रामदेव हो, चाहे अन्ना हजारे हो, फिर चाहे एक निष्ठावान ईमानदार राष्ट्र समर्पित भावना वाला प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ही क्यों न हो, हम तो वही करेगें जो हमारे स्वार्थ से लबालब भरा हो, आज का राजनैतिक चरित्र कहता है।

बिच्छू का स्वभाव है सहयोग करने वाले को भी डंक मारना। सांप को अमृत तुल्य दूध पिला दो, पर विष ही बनता है। राष्ट्र नीति नहीं दलगत राजनीति के कारण विरोध का स्वभाव अब संस्कार में परिवर्तित हो गया है।

सामान्य जीवन में किसी भी कार्य के पूर्व कुछ असुविधाएं होती हैं, कुछ कठिनाईयां या विरोध भी सामने आता है। परिवार में नए बालक के आने की प्रसन्नता और उत्साव को कौन नहीं मानता, परन्तु बालक के जन्म के पूर्व प्रसूता के कष्टों से भी कोई मना नहीं कर सकता, किन्तु सभी जानते हैं स्वयं प्रसूता असहनीय दर्द को सहन करने में डरती नहीं, क्योंकि वह जानती है कुछ समय पश्चात अच्छे दिन आने वाले हैं। उन अच्छे दिनों का संबल कष्टों को सहन करने की हिम्मत देता है।

बीमार होने पर बच्चा कड़बी दवाई और इंजेक्शन के भय से डरता है, चिल्लाता है इसलिए क्योंकि वह नहीं जानता यही उसकी बीमारी को यही थोड़ा कष्ट दूर करेगा। किन्तु समझ आने पर स्वयं जाकर उस कड़वी दवा इंजेक्शन यहां तक कि ऑप्रेशन की पीड़ा को भी सहन करते है क्योंकि वह जानता है कि इस पीड़ा का परिणाम अच्छा होने वाला है।

इसी प्रकार किसी बड़े सुधार या राष्ट्रीय हित को ध्यान में रखते हुए होने वाली कुछ समस्याओं को सहन करके उससे विचलित नहीं होना चाहिए। आजकी यही सहनशीलता राष्ट्र का संबल बनेगी। स्वार्थवश राई सी समस्या को पहाड़ बनाने वालों का इस देश से नहीं कुर्सी से प्रेम है। इसलिए इनके बहकावे में आकर धैर्य नहीं छोड़े अपितु धैर्यता के साथ वर्तमान परिस्थिति में रहकर सहनशील बनें और राष्ट्रहित में सहयोगी बनें।

ये समय है, समय का प्रवाह रूकता नहीं,
ये सभी बदल जायेगें।
आज, बढ़ चढ़कर विरोध करने वालों के,
देख लेना, कल चेहरे उतर जायेगें।।

www.thearyasamaj.org

वेद वाणी

तदवै राष्ट्रमा स्त्रवति, नावं भिन्नामिवोदकम्।
ब्राह्मण यत्र हिसन्ति, तद् राष्ट्रं हन्ति दुच्छना।।
ऋषि–मयोभुः। देवता–ब्रह्मगवी / छंद अनुष्टुप

अथर्ववेद –	5	19	8
	काण्ड	सूक्त	मन्त्र

(यत्र) जहाँ (ब्रह्माण) ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मण की (हिंसन्ति) हिंसा करते हैं (तत्) वह (राष्ट्र) राष्ट्र (वै) निश्चय ही (अस्त्रवति) चू जाता है। (तत) उस (राष्ट्र) राष्ट्रं की (दुच्छना) दुर्गति (हन्ति) नष्ट – भ्रष्ट राष्ट्र को कर देती है। (इव) जैसे (भिन्ना) फूटी हुई छिद्र वाली (नावं) को (उदक) पानी नष्ट–भ्रष्ट कर देता है।

है राजन्। क्या तुम सोचते हो कि ब्राह्मण की हिंसा कर लोगे, उसकी वाणी की उपेक्षा कर दोगे। उसके परामर्शों को ठुकरा दोगे ? भले ही तुम ब्राह्मण को अपमानित कर लो, उसे कारागार में कैद कर दो। उस पर न बोलने के अध्यादेश जारी कर दो, उसे कोड़ों की मार लगवा दो, पर उससे तुम्हें कुछ उपलब्धि होने वाली नहीं है।

याद रखो–जिस राष्ट्र में ब्राह्मण का अनादर होता है वह राष्ट्र चू जाता है, उस राष्ट्र का वर्चस्व चू जाता है। उस राष्ट्र का वैभव प्रताप और प्रभाव चू जाता है। बड़े–बड़े राज्य जिनकी विश्व में धाक थी वे विद्वान ब्राह्मणों का तिरस्कार करने मात्र से प्रभावहीन हो गए।

ब्राह्मण का तिरस्कार व्यक्ति का तिरस्कार नहीं अपितु ज्ञान और विवेक का, सुमति का, धर्म का, ब्रह्मवर्चस का, कर्तव्य का, दूरदर्शिता का तिरस्कार है। जैसे फूटी नौका को नदी का पानी नष्ट कर देता है, ऐसे ही जिस राष्ट्र में ब्राह्मण की हिंसा होती है उस राष्ट्र को दुःख एवं दुर्गति नष्ट कर देती हैं ब्राह्मण से निकलने वाली संपदा राष्ट्र की दिव्य संपदा है, उससे राष्ट्र को वंचित किया गया तो राष्ट्र खोखला हो जाएगा छात्र धर्म और ब्राह्मण धर्म एक साथ मिलकर राष्ट्र का उत्थान कर सकते हैं।

अतः ब्राह्मण–सम्मान राष्ट्र की महती आवश्यकता है इसलिए है राष्ट्र के कर्णधारों ! ब्राह्मण की विद्या वैभव की धर्मनिष्ठा की, आध्यात्मिकता, आस्तिकता की राष्ट्र में प्राण प्रतिष्ठा करो जो गुण कर्मनिष्ठा अनुसार ब्राह्मण है उनके परामर्श का आदर करो। उन्हें ऊँचा पद दो, ऊँचा आसन दो, इससे राष्ट्र अपने गौरवमय अतीत को अर्जित करेगा। ब्रह्मज्ञान की दिव्य पताका को ऊँचे से ऊँचे फहराएँगा।

प्रस्तोता : राजेन्द्र व्यास, उज्जैन

www.thearyasamaj.org

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

– प्रकाश आर्य, महू

जिनके न रहने पर भी उनकी यादें सीने में है।
मौत ऐसी हो तो क्या रखा जीने में है।।

स्वामी श्रद्धानन्द को किस नाम से पुकारें देशभक्तद्व राष्ट्रनायक, सनातन संस्कृति रक्षक, अछूतोद्धारक, विद्वान त्यागी, अदम्य साहस के धनी, क्या–क्या कहा जाए, अनेक गुणों की वे खान थे। रग–रग में समाज, संस्कृति और राष्ट्र की रक्षा और उन्नति का भाव समाया हुआ था।

जिस क्षेत्र में बढ़े उसी में क्षितिज सी ऊंचाईयां प्राप्त की। वैसे तो इस भारत भूमि पर अनेक महापुरूषों की शौर्यता, विद्वता या राष्ट्रीयता के कारण इतिहास साक्षी बना। किन्तु किसी एक में इन सभी का समावेश हो वह तो एक ही नाम सामने आता है और वह है स्वामी श्रद्धानन्द।

दूसरी और विशेषता और परिवर्तन की मिसाल बना उनका अपना जीवन। एक आदतन नशे का आदि, मांसाहार करने वाला, घोर नास्तिक व्यक्ति अपनी योग्यता, व्यवहार, उच्च चरित्र के कारण महात्मा बन जावे, यह अपने आप में एक अद्वितीय ऐतिहासिक घटना है।

दिल्ली के चॉदनी चौक पर खड़ा स्टेच्यू उनके साहस और राष्ट्रीयता का सन्देश आज भी दे रहा है। इसी स्थान पर आर्य सन्यासी ने अंग्रेजों को ललकारते हुए अपना सीना उनकी संगीनों के आगे अड़ा दिया था। एक निहत्थे सन्यासी के आत्मबल, निडरता और राष्ट्रभक्ति से भरे व्यक्तित्व के आगे अंग्रेजों को अपनी संगीने झुकाना पड़ी और जुलूस आगे बढ़ गया।

महापुरूष का दृष्टिकोण विशाल और समभाव का होता है। इसका उदाहरण दिल्ली की जामा मस्जिद से वेद मन्त्र बोलते हुए हिन्दू मुसलमानों को उपदेश, अमृतसर के अकाल तख्त से उपदेश, सिख्खों के लिए 6 माह की जेल। इतना ही नहीं अन्तिम स्वांस तक सनातन धर्म के लिए स्वास्थ्य ठीक न होने पर भी चर्चा के लिए हत्यारे अब्दुल रसीद को पास आने की अनुमति। ये घटनाएं साधारण नहीं हैं अपितु अद्वितीय और अविस्मरणीय है। जलियांवाले बाग के पश्चात अमृतसर का कांग्रेस राष्ट्रीय अधिवेशन संभवतः निरस्त हो जाता। किन्तु विपरीत परिस्थितियों में पानी में चलकर, घर–घर हाथ में लालटेन लेकर अमृतसर निवासियों को अपने यहां ठहरने की प्रार्थना की। नगरवासियों ने स्वामी के आदेश को स्वीकार करते हुए पूरा सहयोग

www.thearyasamaj.org

दिया। इस सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द ही थे, जिसमें पहलीबार उन्होंने अछूतोद्धार का प्रस्ताव हिन्दी में रखा था। आगे उनकी राजनीति छोड़ने का यही कारण बना।

मुस्लिम कट्टरपंथी स्वामीजी के इस प्रस्ताव व शुद्धिकरण का विरोध करने लगे, महात्मा गांधी भी उनके पक्ष में ही रहे। इसी कारण स्वामीजी ने अपनी संस्कृति को महत्व देते हुए अपने पद से त्याग दिया।

स्वामीजी के जीवन मं अनेक हैरत अंगेज करने वाली घटनाए है, एक बार क्षेत्र के डाकू ने गुरूकुल में डाका डालने की योजना बनाई। स्वामी जी को जब इस बात की जानकारी लगी तो वे स्वयं उस डाकू के अड्ड़े पर पहुंच गए। उनके व्यक्तित्व और निडरता ने डाकू को आश्चर्य चकित कर दिया। स्वामीजी के समक्ष नतमस्तक हो गया और गुरूकुल की सहायता हेतु वचनबद्ध हुआ।

राष्ट्रीय स्तर पर स्वामीजी का नाम जाना पहचाना था राष्ट्र नेता के रूप में प्रचलित था। अंग्रेज अधिकारी एकाएक स्वामीजी को बिना सूचना दिए गुरूकुल में जांच पड़ताल के लिए पहुंचे। स्वामीजी से बोले सुना है आपके यहां बम बनते है। स्वामीजी ने कहा ठीक सुना और एक विद्यार्थी को बुलाकर कहा ये मेरे एटम बम हैं जो पूरी दुनिया में तहलका मचायेगें।

सनातन संस्कृति की व्यवस्थित शिक्षा दीक्षा की परम्परा समाप्त सी हो गई थी, धर्म के नाम पर आडम्बर था। विधर्मी शिक्षा के माध्यम से अपना प्रचार प्रसार कर रहे थे, उस समय स्वामीजी ने विचार कर गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना की, जिसके विश्व प्रसिद्ध संस्था के रूप में पहचान बनीं।

महर्षि दयानन्द के पश्चात उनके आदर्शों और विचारधारा को आगे बढ़ाने का कार्य स्वामी श्रद्धानन्द ने किया उसका कोई सानी नहीं है।

बटते हुए, बहकते हुए हिन्दू समाज को सहारा और सत्य पथ दिखाया, इससे आज हिन्दू सुरक्षित व बहुसंख्यक बना हुआ है। शुद्धि आन्दोलन ने एक नव चेतना का संचार किया।

अनेक महापुरूषों ने स्वामीजी के बलिदान पर अपने विचार व्यक्त किए, देश की एक बहुत बड़ी कमी दर्शायी, वहीं वीर सावरकर ने श्रद्धांजलि देते हुए कहा स्वामी जी आपके रक्त का यह ऋण हिन्दू जाति कभी न उतार पायेगी। ऐसे महान योद्धा कर्मवीर को शत्–शत् नमन्।

www.thearyasamaj.org

एक और स्वतन्त्रता संग्राम जरूरी है

एक और स्वतन्त्रता संग्राम जरूरी है,
वर्ना मिली स्वतन्त्रता अभी अधूरी है।

मॉ परतन्त्र नहीं है अब, गौरों से,
अस्तीन के सांप घातक हैं औरों से।

अन्तर इतना ही आया है,
पहले गौरों ने, अब बेटों ने बन्धक बनाया है।

अस्तित्व छिन्न–भिन्न कर रहे, हमारे अपने,
धूमिल कर रहे, शहीदों के सपने।

घिर आयी काली घटा, घनघोर आपदा लिए,
जनता पुकार रही, रक्षा के लिए।

बन्धुआ हो गई राष्ट्रीयता, चन्द हाथों में,
विष भरा हुआ है जिनकी हर स्वांसों में।

बेहरूपिये स्वांग बना कर सबको बहला रहे,
दूषित भावना वाले भी, राष्ट्र भक्त कहला रहे।

अब अन्धेरों से डर नहीं, डर है उजालों से,
धोखा दूसरों से नहीं, डर है घर वालों से।

राष्ट्रीयता पर उंगली उठाने लगे चन्द देशद्रोही,
क्योंकि ये प्रजातन्त्र है, कह सकता, कुछ भी कोई।

खुलेआम मॉ भारती का अपमान हो रहा,
पर दुःख है मेरा देश, आज भी सो रहा।

वो स्वतन्त्रता जरूरी थी, स्वाभिमान के लिए,
ये स्वतन्त्रता जरूरी है, वर्तमान के लिए।

वैसे स्वतन्त्र होकर भी तो परतन्त्र जीवन जी रहे,
अमृत लगे लेबल में, जहर के प्याले पी रहे।

www.thearyasamaj.org

इस स्वतन्त्रता का आन्दोलन जब हर घर,
हर नगर, हर चौपाल से उठेगा।
तभी जाकर कहीं भारत का स्वर्णिम स्वरूप दिखेगा।।

छुट्टे साण्ड़ों पर नियन्त्रण भी तभी हो पायेगा।
फिर हर कोई यहां "वन्दे मातरम्" भी गायेगा।।

प्रजातन्त्र बंटा हुआ है चन्द हाथों में।
कर्म से खाली, बचा हुआ है बातों में।।

प्रजातन्त्र का अर्थ जन–जन को समझाना होगा।
राष्ट्र धर्म का महत्व भी बतलाना होगा।।

देश के नागरिक हो, स्वामी हो, ये देश तुम्हारा है।
कपूतों से आजादी के लिए, माँ ने फिर पुकारा है।।

इसमें अब नहीं कोई विराम चाहिए।
देश को विश्वगुरू की पहचान चाहिए।।

संभलो जयचन्दों की फिर चाल गहरी है।
मेरे देश को एक और स्वतन्त्रता संग्राम जरूरी है।

– प्रकाश आर्य, महू

न वेदानां परिभषाना शाठ्येन न माथया।
महत्प्राप्नोति पुरूषो ब्रह्मणि ब्रह्मविन्दति।। शान्ति पर्व 53/17

वेदों का अनादर करने से, शठता, छल, कपटपूर्ण व्यवहार से कोई भी मनुष्य परब्रह्म परमात्मा को नहीं पा सकता। वेदों और उसमें बताए कर्मों पर ही उसे ब्रह्म प्राप्ति होती है। क्योंकि शास्त्रों में वेद ही सर्वोत्तम व सबका आधार हैं। महात्मा मनु कहते हैं **"नास्ति वेदात् समं शास्त्रं"** वेद के समान कोई शास्त्र नहीं।

इसलिए परमात्मा की हम सब पर बहुत कृपा है उसका पवित्र कल्याणकारी ज्ञान हमें वेद के रूप में प्राप्त हुआ, जिसका रसास्वादन हम करेगें, यह शुभ अवसर भी हमारे जन्म जन्मान्तरों के पुण्य कर्मों का फल है।

www.thearyasamaj.org

पुनः स्मरण –

स्वाध्याय पत्राचार पाठ्यक्रम प्रारूप

प्रान्तीय सभा द्वारा ज्ञानवर्धक एक श्रेष्ठ योजना

मान्यवर,

आर्य समाज की मान्यता का आधार वेदादि शास्त्र हैं, आर्य समाज के सिद्धान्त पूर्णतः इन्हीं आर्ष ग्रंथों पर आधारित हैं। यह भी पूर्ण सत्य एवं सर्वमान्य है कि वेद और वैदिक साहित्य समाज में उपलब्ध समस्त विचारधाराओं से श्रेष्ठ व सत्य पर आधारित हैं।

महर्षि दयानन्द रचित ग्रंथों के पठन–पाठन में लेशमात्र भी वैदिक विचारधारा से हटकर कुछ नहीं है। जब तक इन ग्रंथों का आर्यजन स्वाध्याय करते रहे तब तक आर्य समाज की मान्यताओं में स्थायित्व व एक दृढ़ता थी, व्यक्ति समर्पित व पक्के मिशनरी थे। स्वाध्याय की कमी से व्यक्ति व परिवार आर्य विचारधारा के साथ नहीं जुड़ रहे हैं, आज शिथिलता अथवा बिखराव की स्थिति बनते जा रही है।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती है कम से कम उनके रचित ग्रंथों की जानकारी और उनका पठन पाठन भी हमारी विचारधारा को तरोताजा बनाए रखता है। महर्षि के अनमोल तर्क संगत विचार पढ़कर दृढ़ता आती है। अपनी विचारधारा में दृढ़ता के लिए यह क्रम आर्यों में निरन्तर चलते रहना चाहिए।

इसी भावना से महर्षि की अनमोल रचना ऋग्वेदभाष्यभूमिका का प्रारंभ स्वाध्याय घर–घर में हो सके, इस हेतु डॉ. सोमदेवजी शास्त्री, मुम्बई ने इस पुस्तक का क्रमबद्ध स्वाध्याय करने की दृष्टि से एक अत्यन्त प्रसंशनीय कार्य प्रारंभ किया। जिसमें अलग–अलग 10 भागों में प्रतिमाह ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के संबंध में जानकारी प्रेषित की जावेगी। इसका एक और बड़ा लाभ होगा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का स्वाध्याय व संग्रह हमारे परिवारों में हो जावेगा। इसके पष्चात सत्यार्थ प्रकाष, मनुस्मृति, संस्कार विधि, उपनिषद आदि के संबंध में यही क्रम प्रारंभ किया जावेगा।

इसकी उपयोगिता और रूची को देखते हुए **आगे एक माह के स्थान पर 15 दिन में प्रारंभ किया जा सकता है।** प्रतिमाह डाक न मिलने पर फोन से या पत्र से यथाषीघ्र सूचित करे ताकि पुनः व्यवस्था की जावें।

यह जानकारी छोटी सी पुस्तिका के रूप में होगी। इसके पीछे ही कुछ प्रश्न उल्लेखित होगें, जिनका उत्तर इसी पुस्तक में से प्राप्त हो जायेगा। स्वाध्याय का सरल रोचक और आकर्षक तरीका इससे अच्छा नहीं हो सकता है।

इसलिए प्रयास यह होना चाहिए कि यह योजना घर–घर में प्रत्येक सनातन धर्मी के पास एवं कम से कम प्रत्येक आर्य परिवार में पहुंचे। कृपया प्रत्येक आर्य परिवार को इसकी जानकारी देवें।

कृपया शीघ्र ही अपनी स्वीकृति नीचे दिए प्रारूप अनुसार धनराशि सहित निम्न पते पर प्रेषित करें।

स्वाध्याय पत्राचार पाठ्यक्रम

आर्य समाज मन्दिर, महू जिला इन्दौर (म. प्र.) 453441

दूरभाष : 07324–273201, 226566, 9826655117

www.thearyasamaj.org

उद्देश्य

"वैदिक वाड्मय के प्रतिरूचि जागृत करके उसके स्वाध्याय के लिये प्रेरित करना तथा तदनुकूल आचरण द्वारा मानव जीवन का लक्ष्य एवं कर्तव्य का बोध कराना।"

नियम

1. पाठ्यक्रम का **सत्र प्रत्येक वर्ष के जनवरी से दिसम्बर 1 वर्ष तक** होगा। 1 वर्ष पश्चात दूसरा पाठ्यक्रम प्रारंभ करेगें। मार्च या अप्रेल में परिणाम और पुरस्कारों की घोषणा तथा अगले पाठ्यक्रम की सूचना।

2. प्रत्येक अंक के अन्त में पांच प्रश्न होगें जिनका उत्तर अलग कागज पर लिखकर नाम व पता लिखकर मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कैम्प कार्यालय **आर्य समाज, लुनियापुरा, महू** पर प्रतिमाह भेजना होगा।

3. 80 प्रतिशत या उससे अधिक अंकों के तीन विजेताओं को प्रथम **तीन** पुरस्कार लक्की ड्रा के आधार पर प्रत्येक को **1100/–** का पारितोषिक। 70 प्रतिशत या उससे अधिक अंकों के **तीन** विजेताओं को प्रत्येक तीन को **501/–** का पारितोषिक। 50 प्रतिशत या उससे अधिक अंकों के **तीन** विजेताओं को प्रत्येक को **251/–** का पारितोषिक दिये जायेगें। 40 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले विजेताओं को प्रमाण पत्र दिया जायेगा।

4. मुद्रण एवं डाक व्यय आदि हेतु पाठ्यक्रम का **वार्षिक शुल्क रू. 150/–** है। यह राशि इस फार्म के साथ भेजना आवश्यक है, यह राशि मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कोष में नगद, चैक अथवा खाता क्रमांक 062510001576 देना बैंक, टी. टी. नगर, भोपाल में भेजी जा सकती है। उसकी जानकारी फार्म में भरकर प्रेषित करें।

5. प्रतियोगियों की आयु सीमा 15 से 25 वर्ष तक।

पाठ्यक्रम में भाग लेने हेतु निम्नलिखित प्रारूप के अनुसार जानकारी देवें।

1. मेरा नाम ____________________

2. पिता का नाम श्री ____________________

3. आयु. __________ शैक्षणिक योग्यता __________

4. ग्राम/शहर. __________ तहसील. __________

जिला __________ पिन कोड __________

मोबाईल नम्बर __________ अथवा दूरभाष नं. __________

प्रतियोगिता में राशि 150/– .... के द्वारा भेजी है।

दिनांक........................ **हस्ताक्षर**

www.thearyasamaj.org

देश के पूर्वोत्तर क्षेत्र (आसाम, नागालैंड) में सनातन संस्कृति एवं विद्या के प्रचार–प्रसार का अभूतपूर्व आयोजन

विपरीत परिस्थितियों, विचारों की प्रतिकूल विचारधारा के वातावरण में जन और धन के अभाव में भी यदि अभूतपूर्व सबको आश्चर्यचकित करने वाला कोई कार्यक्रम सम्पन्न हो जावे तो उसकी प्रशंसा के लिए प्रत्येक शब्द छोटा पड़ जाता है।

यह एक कोरी कल्पना पर निर्मित विचार या जुमला नहीं अपितु दिनांक 19 से 21 नवम्बर 2016 को नागालैण्ड, असम में दयानन्द सेवाश्रम के माध्यम से आयोजित कार्यक्रम में यह चरितार्थ हुआ है। कार्यक्रम की भव्यता, व्यवस्था, सुन्दरता और गरिमामय मंच, अविश्वसनीय अपार जनसमूह की उपस्थिति यह सबकुछ अवर्णनीय हो गया।

छोटे से छोटे आदिवासी नागरिक से लेकर प्रदेश के अनेक प्रतिष्ठित जन सामाजिक कार्यकर्ता, पत्रकार एवं दोनों प्रदेशों के राज्यपाल, नागालैण्ड के मुख्यमन्त्री, शिक्षामन्त्री, विधायक, जाति व ग्राम के प्रमुख, सभी एकमत से कार्यक्रम को अभूतपूर्व बताते हुए आयोजकों की सार्वदेशिक सभा की, दयानन्द सेवाश्रम की भूरी–भूरी प्रशंसा कर रहे थे।

ग्रामीण क्षेत्र दूर दराज से, वाहनों से तथा पैदल कार्यक्रम स्थल पर पहुंचे हजारों की संख्या में स्त्री–पुरूष जिनमें अधिकांश नवयुवक–युवतियॉ और बालक बालिकाएं भी थी।

आयोजन था महाशय धर्मपाल जी के सहयोग से धनश्री (असम) में लगभग 4 से साढ़े चार करोड़ की लागत से निर्मित विद्यालय का उद्घाटन और दीमापुर (नागालैण्ड) में छात्रावास और विद्यालय के नव निर्माण का शिलान्यास। साथ ही जनजाति वैदिक विराट सम्मेलन एवं शिक्षा, संस्कृति, छात्रावास की वृद्धि पर विचार एवं सहयोग।

जिस प्रयोजन को लेकर यह कार्यक्रम का आयोजन किया गया था उसकी सफलता का जो अनुमान था उस अनुमान से कई गुना अधिक सफलता मिली। नागालैण्ड व असम को जो भेंट, जो सहयोग की दानी महानुभावों ने जो सौगात दी वह ऐतिहासिक उपलब्धि बन गई।

इन तीन दिनों की सफलता, सक्रियता, चेतना और दानशीलता के साथ अदम्य उत्साह, नवचेतना का वर्णन होना संभव नहीं, किन्तु कुछ प्रमुख बिन्दुओं पर अपनी लेखनी से कुछ दर्शाने का प्रयास कर रहा हूं।

पूर्व निश्चयानुसार दिनांक 19/11/2016 को दिल्ली, हरियाणा, मध्यप्रदेश, कोलकता, पंजाब से बडी संख्या में आर्यजन जिनमें अनेक आशीर्वाददाता व द्वजन कार्यक्रम के साक्षी बन वहां पहुंचे। कुछ व्यक्ति 18 की रात्रि में ही दीमापुर (नागालैण्ड) पहुंच गए थे। कार्य की सफलता हेतु कुछ दयानन्द सेवाश्रम के प्रमुख कार्यकर्ता व पदाधिकारी 10 दिन पहले तैयारी हेतु पहुंच गए थे, इनमें आचार्य

www.thearyasamaj.org

दयासागर, जीववर्धन शास्त्री, सन्तोष शास्त्री और इनके कुछ सहयोगी थे। श्री जोगेन्दर खट्टर कार्यवाहक प्रधान दयानन्द सेवाश्रम संघ, श्री विनय आर्य, श्री नीरजजी आदि भी पूर्व में पहुंच गए व कार्यक्रम की सारी व्यवस्था की।

19/11/2016 को महाशय धर्मपालजी अध्यक्ष दयानन्द सेवाश्रम, श्री दीनदयालजी गुप्ता, (नार्थ ईष्ट क्षेत्र), श्री शत्रुघ्नजी, रांची (उपप्रधान), श्री धर्मपाल आर्य (प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) तथा अनेक आर्यजनों के साथ मैं भी वायुयान के साथ दीमापुर (नागालैण्ड) पहुंचे। एयर पोर्ट पर सैकड़ों की संख्या में स्थानीय पहरावे में जन समुदाय उपस्थित था। करीब 1 घण्टे तक व हां महाशय धर्मपालजी का स्वागत किया गया।

एयरपोर्ट से नागालैण्ड में स्थित बोकाजान पहुंचे, वहां सायंकालीन भोजन व कार्यक्रम का आयोजन किया गया। हजारों की संख्या में उपस्थित नागरिकों एवं विद्यालयों के छात्र छात्राओं, उनके पालकों की उपस्थिति में यह हुआ, तत्पश्चात मंच से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। बोकाजान में निर्मित भवन बहुत पुराना व जीर्ण स्थिति में है। सभी ने उस स्थान पर एक छात्रावास व विद्यालय की महती आवश्यकता बताते हुए उसके विस्तार व नवीनीकरण का महाशय धर्मपालजी से निवेदन कर सहयोग का प्रस्ताव रखा।

उदारमना, भामाषाह महाशय धर्मपालजी ने अपनी उदारता व दानशील भावना का पुनः परिचय देते हुए एक बहुत सुन्दर भवन निर्माण का सहयोग देने की घोषणा की। यह भवन करोड़ों की लागत से बनेगा, पूरे क्षेत्र के विद्यार्थियों को इससे बहुत लाभ होगा, संस्कृति की रक्षा व विद्या की वृद्धि होगी।

दूसरे दिन प्रातः 9 बजे से धनश्री स्थित अति भव्य व विशाल विद्यालय भवन का जिसमें विद्यालय व छात्रावास दोनों का संचालन होगा उसका उद्घाटन होना था। साथ ही विराट जनजाति वैदिक सम्मेलन भी उसके पास ही दयानन्द सेवाश्रम की 160 बीघा जमीन पर आयोजित था। वहां विशाल पांडाल जिसमें 8 से 10 हजार व्यक्तियों की व्यवस्था थी, 100 बाय 40 फुट का विशाल मंच बनाया था, बनाया था तथा वहां थी।

आर्य समाज के इस क्षेत्र को सबसे बड़ा देन है माता प्रेमलता जी के सहयोग से इस क्षेत्र में आपराधिक कार्य में लिप्त अनेक व्यक्तियों ने इसी धनश्री के मैदान पर माताजी की उपस्थिति में शासन के समक्ष आत्म समर्पण किया था और अपने शस्त्र आदि भी जमा कर दिए थे, उसके पश्चात उन्होंने उस अपमानित जीवन को त्यागकर समाज सेवा व अन्य कार्यों में भाग लेना प्रारंभ कर दिया। दल के प्रमुख श्री दिलीप मुनीषा एवं अमित मुनीषा। इस प्रकार 6 दलों ने सत्य मार्ग को अपनाया और आज वे आर्य समाज के सहयोगी हैं।

दीमापुर से ट्रेन के द्वारा (दीमापुर से धनश्री का रास्ता अत्यन्त कष्टदायक उंचे-नीचे गड्ढों वाला होने से) धनश्री रेल्वे स्टेशन पहुंचे।

www.thearyasamaj.org

वहां जो दृश्य था उसे देखकर ऐसा लग रहा था कि क्षेत्र के पूरे आदिवासी ही कार्यक्रम में व महाशय धर्मपालजी के स्वागत के लिए एकत्रित हुए हैं, उनकी संख्या भी हजारों में थी। जब वहां से कार्यक्रम स्थल की ओर बढ़े तो लगभग 100 नवयुवक मोटर सायकल पर ओ3म् पताका लगाए जय घोष करते हुए आगे–आगे चल रहे थे।

ओ3म् ध्वज से सजी खुली जीप में मुझे बैठाया गया, साथ में सुरेश मलिक सहित और कार्यकर्ता थे, हमारे पश्चात 15 से 20 कारें, पैदल, सायकिल व जिससे जैसे आते बना एक बड़ा जुलुस धनश्री रेल्वे स्टेशन से नवनिर्मित भवन तक (लगभग 2 किलोमीटर) नारे लगाते हुए चल रहा था। हर कोई बड़े आश्चर्य से इस भव्य शोभायात्रा को देखकर उसी वातावरण में रंग जाता भारत माता की जय, वन्दे मातरम्, आर्य समाज के नारे लगाने लगता।

पूरे 2 किलोमीटर में सैकड़ों ओ3म् ध्वज बेनर महाशय जी के अभिनन्दन के फ्लेक्स, स्वागत द्वार लगे हुए थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे पूरा क्षेत्र आर्य समाज मय हो गया है।

महामहिम राज्यपाल श्री पी. बी. आचार्य, ठीक समय पर विद्यालय परिसर में पधारे वहां यज्ञ में बैठकर आहुति दी व भवन का उद्‌घाटन किया। फिर वहां से चलकर कार्यक्रम स्थल पर पहुंचे।

सर्वप्रथम सबका प्रान्त की व आदिवासी परम्परा के अनुसार स्वागत किया। कार्यक्रम में सार्वदेशिक सभा मन्त्री की ओर से (मेरा) उद्‌बोधन, आर्य समाज, राज्यपाल महोदय का परिचय, तथा गतिविधियों पर हुआ। **महाशय धर्मपालजी ने आशीर्वचन के साथ दो घोषणाएं और की। पहली घोषणा सत्र 2017 जो जनवरी से प्रारंभ होता है उसमें प्रवेश लेने वाले किसी भी छात्र से प्रवेश शुल्क नहीं लिया जावेगा। दूसरी घोषणा विद्यालय में विद्यार्थियों को लाने ले जाने की सुविधा हेतु एक और स्कूल बस प्रारंभ की जावेगी।**

इस घोषणा से उपस्थित हजारों की संख्या में स्थानीय नागरिकों ने प्रसन्नता से ताली बजाकर महाशय धर्मपाल की जय के नारों से पाण्डाल गूंजा दिया। श्री दीनदयाल जी गुप्ता तथा धर्मपालजी आर्य ने भी अपने उद्‌बोधन में पूर्ण सहयोग करने व दूसरों को भी आगे आने की अपील की।

महामहिम राज्यपाल श्री बनवारीलालजी पुरोहित द्वारा अत्यन्त प्रभावी, सार्थक व मार्मिक उद्‌बोधन देते हुए आर्य समाज के कार्यों की महर्षि दयानन्द जी के प्रयास की प्रशंसा की। ऊंच–नींच के भेदभाव को समाप्त करने हेतु विद्या के प्रचार हेतु कुरीतियों को नष्टकरने हेतु आर्य समाज का महत्व बताते हुए आप उसके प्रयासों की और आवश्यकता है कहा। विद्या के संस्कार व संस्कृति होना चाहिए। एक अच्छी शिक्षा ही धर्म, संस्कृति व राष्ट्र की रक्षा कर सकती है। यह जब इस विद्यालय में होगा, ऐसा करना चाहिए यह एक बहुत बड़ा कार्य इस क्षेत्र में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द सेवाश्रम आर्य समाज के द्वारा किया गया है, इस हेतु सबको धन्यवाद।

www.thearyasamaj.org

कार्यक्रम को स्थानीय विद्यालय व अन्य राजनेता, सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भी संबोधित करते हुए सहयोग प्रदान करने की घोषणा की।

कार्यक्रम में उसी क्षेत्र के बालक–बालिकाओं द्वारा जिनमें से कुछ दिल्ली में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, सुन्दर नृत्य एवं नाटिका प्रस्तुत की गई, जिसे देख अपार हर्ष का वातावरण बना। कार्यक्रम में बाहर से पधारे आर्यजनों का स्वागत किया व कार्यक्रम का संचालन श्री विनय आर्य, श्री जोगेन्दर खट्टर ने किया।

तीसरे दिन सुबह 10 बजे दीमापुर स्थित भवन (विद्यालय, छात्रावास) का पुनरोद्धार हेतु शिलान्यास किया जाना था। कार्यक्रम के मुख्य **अतिथि महामहिम राज्यपाल श्री पी बी आचार्य के कर कमलों से हुआ।** इसके पूर्व आपने सपत्निक यज्ञ किया।

माननीय राज्यपाल सपत्निक श्रीमती कविता आचार्या के साथ पधारें साथ ही शिक्षा मन्त्री श्री विराचू, नागालैण्ड तथा अन्य वरिष्ठ पदाधिकारी भी पधारें। प्रारंभ में परम्परागत रूप से अतिथिगण का स्वागत किया।

कार्यक्रम में उद्बोधन हेतु मुझे आमन्त्रित किया गया। इसके पश्चात श्री दीनदयालजी गुप्ता ने भी अपनी बात कहते हुए भवन निर्माण की घोषणा सबके सहयोग से बनाने की घोषणा की। यह भवन भी भव्य एवं विशाल बनेगा जिसमें दूर दराज ग्रामीण क्षेत्र के बालक रहेगें व शिक्षा ग्रहण करेगें।

राज्यपाल महोदय ने 40 मिनिट के सारगर्भित सनातन संस्कृति वे पोषक व्याख्यान ने सबको प्रभावित किया। आपने अपने उद्बोधन मानवीय विसंगतियों, भेदभाव की भावना को दूर करने, उसके सहायक बनने का कहा। समाज द्वारा अज्ञानतावश उपेक्षित समाज के उस वर्ग को साथ में जोड़ने से ही यह देश एक सुदृढ़ देश बनेगा।

अन्त में महाशय धर्मपालजी ने आशीर्वचन दिए। सफल संचालन श्री विनय आर्य ने किया। कार्यक्रम में उपस्थित स्थानीय व बाहर से पधारे हजारों श्रोतागण दयानन्द सेवाश्रम के इस आयोजन को जहां सराह रहे थे वहीं सहयोग की भी भावना बन रही थी।

महाशय जी ने इस छात्रावास व विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए एक मिनी बस प्रदान करने की घोषणा की। उपस्थित जन समूह ने भावविभोर होकर अभिवादन किया।

कहते हैं सत्य पथ पर चलने वालों की और निष्काम कर्म करने वालों की परमात्मा पूर्ण सहायता करता है, वह इस कार्यक्रम में सिद्ध हुआ।

वहां जाकर जब वहां की आवश्यकताओं को आर्यजनों ने देखा तो उस अभाव व अत्यन्त महत्वपूर्ण आवश्यकता को समझा। एक चेतना और प्रेरणा का संचार उनकी आत्मा में भी हुआ और सहयोग के लिए दिल खोलकर मुक्त हस्त से दान की घोषणाएं होने लगी।

www.thearyasamaj.org

श्री मनोज गुलाटी ने धनश्री में अपनी ओर से एक कन्या छात्रावास बनाने की घोषणा की। श्री रामकृष्णजी तनेजा एवं धर्मपत्नि श्रीमती कृष्णा तनेजा ने भी एक छात्रावास बनाने की घोषणा की। श्रीमती अंजली कपूर ने एक लाख रूपया, जनकपुरी आर्य समाज .आदि द्वारा दान की घोषणा की गई।

समय दान की घोषणा : इस दान का अपना बहुत महत्व है इसके साथ साथ कुछ घोषणा समय दान की भी की गई। इसमें वर्ष में किसी ने एक माह, किसी ने 15 दिन का समय देकर आदिवासी परिवारों से सम्पर्क बढ़ाने तथा विद्यार्थियों को आकर शिक्षा व अन्य व्यवहारिक ज्ञान, सामान्य ज्ञान आदि देने की भावना से यहां रहेगें।

धनश्री में निर्मित विशाल भवन में विद्यालय, छात्रावास, सुविधायुक्त अतिथिकक्ष निर्मित किए गए हैं।

यह घोषणा इस क्षेत्र में वैदिक धर्म प्रचार प्रसार के लिए बहुत सार्थक सिद्ध होगी।

अन्य महानुभावों से एक निवेदन है हमें अपनी मिशनरी भावना को संजोना होगा। जो स्वस्थ है वहां जाकर अपने ज्ञान व विचारों से इस मिशन के लिए सेवा करने का संकल्प लेकर अपनी अनूकूलता के अनुसार वहां के लिए समय देने की घोषणा करनी चाहिए। वहां उनके रहने, भोजन, आने–जाने की अच्छी व्यवस्था रहेगी। इस हेतु अपना समय दान संकल्प फोन 011–23360150 पर अथवा आर्य समाज मन्दिर 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1 पर लिखित में भेज सकते हैं।

हिन्दू सेवा समिति दीमापुर की ओर से नगर में एक भव्य आयोजन स्वागत समारोह दुर्गा मन्दिर में आयोजित किया गया था। जिसमें मुख्य रूप से महाशय धर्मपालजी का और साथ में अन्य आर्यजनों का भी स्वागत किया, सभी के लिए भोजन की व्यवस्था की गई। अग्रवाल समाज, ब्राह्मण समाज, बंगाली समाज, आर एस एस के सदस्य, सिख्ख समाज आदि अनेक संस्थाओं द्वारा स्वागत किया गया तथा आर्य समाज के कार्य को सराहते हुए सहयोग की भावना व्यक्त की।

इस 3 दिवसीय आयोजन से नागालैण्ड और असम को एक नई चेतना सनातन धर्मियों में संगठन, स्वधर्म के प्रति चेतना का प्रवाह हुआ। कोई कुछ भी कहे, कहता रहे, फोटू और समाचार पत्रों से छबि बनाने में लगा रहे, उन सबकी चिन्ता किए बिना ऋषि के कुछ कुछ अनुयायी निरन्तर वैदिक धर्म पताका थामें अपने कर्तव्य का पालन कर रहे हैं।

विदेशों में होने वाले अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन की हकीकत जानकर ही उनके आयोजन के महत्व को समझा जा सकता है। लगभग प्रत्येक देश में इन आयोजनो से एक ऊर्जा मिली है संगठन बढ़ा है अपने देश के अतिरिक्त अन्य देशों के द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में भी आना जाना प्रारंभ हुआ है। यह संगठन के लिए शुभ संकेत हैं।

www.thearyasamaj.org

नेपाल जैसे देश में असंभव को संभव ही नहीं एक ऐतिहासिक कार्यक्रम बना कर आर्यों ने नया अध्याय जोड़ दिया, जिससे आर्य जगत के अतिरिक्त समस्त सनातनधर्मियों (हिन्दुओं) में नई चेतना आयी।

इसी प्रकार केरल में जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता है, वेद प्रचारक प्रशिक्षण का वहां केन्द्र बनाकर बहुत बड़ा कार्य हुआ। विश्व स्तरीय वैदिक अनुसंधान व प्रशिक्षण की दृष्टि से करोड़ों की लागत से प्रारंभ होने वाला प्रकल्प संगठन को वह गति देगा जिसके विकास की कल्पना आज हम कर रहे हैं।

निराशा के दौर से गुजरता संगठन एक उज्जवल प्रगतिशील उत्साह से पूर्ण पथ पर चलने लगा है। इसकी गति और सहयोग, सहारे, सद्भाव की आवश्यकता है कार्यकर्ता जो इसके लिए समय दे रहे हैं, दान दे रहे हैं उन्हें समस्त आर्यजनों के संबल, सुझाव व सहानुभूति की आवश्यकता है। निराशा भाव छोड़िए समय करवट ले रहा है, पंचकुला में बनने वाला विश्व स्तर का वैदिक केन्द्र एक नए युग को दिशा देगा।

इस समय ऐसे ही रचनात्मक कार्यों के आर्य समाज के अतिरिक्त अन्य जनसमूह के मध्य करने की आवश्यकता है तथा सनातन संस्कृति की रक्षा व विस्तार संभव है।

इस अवसर पर सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य को भी पधारना था उनकी ही अध्यक्षता में यह सम्पूर्ण कार्य होना निश्चित था किन्तु स्वास्थ्य ठीक नहीं होने से वे वहां नहीं पहुंच पाए, और दूरभाष से सम्पर्क कर सारी जानकारी वे प्राप्त करते रहे, कार्यक्रम में उनके उपस्थित नहीं होने से एक बड़ी कमी खलती रही। इत्योम्

हमारा निवेदन

"आपसी दूरियां घटाओं, आर्य समाज बढ़ाओं।"

(प्रकाश आर्य)

सभामन्त्री : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

7 दिवसीय ऋग्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

भोपाल। श्री वेदप्रकाश जी शर्मा (रिटा. आई. जी.) के निवास स्थान पर 7 दिवसीय ऋग्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में अनेक गणमान्य नागरिकों सहित विद्वान उपस्थित हुए जिनमें स्वामी अमृतानन्दजी, स्वामी सर्वानन्दजी, डॉ. सोमदेवजी, आचार्य ओम.जी, सभामन्त्री श्री प्रकाश आर्य, आचार्य सत्यदेवजी, डॉ. आनन्द आर्य (रिटा. आई. जी.) आदि उपस्थित हुए।

www.thearyasamaj.org

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्यों की सूची सत्र 2016 से 2019

श्री इन्द्रप्रकाशजी गांधो प्रधान – म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा गांधी पेट्रोल पम्प,शिवपुरी (म.प्र.) 473551 मो. 9425137097	श्री प्रकाशजी आर्य मंत्री–म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा 2795 इन्दौर रोड़ महू (म.प्र.) 453441 मो. 9826655117
श्री अतुलजी वर्मा कोषाध्यक्ष – म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा 113, कर्मवीर नगर नरेला शंकरी भोपाल (म.प्र.) मो. 9893037916	श्री वेदप्रकाशजी आर्य भू सम्पत्ती अधिष्ठाता–म.भा. आर्य प्रतिनिधि सभा 145, अलखधाम नगर उज्जैन (म.प्र.) मो. 9425930484
श्री काशीरामजी अनल आर्य वीर दल – म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा मु. पो. कानड़ जिला शाजापुर (म.प्र.) मो.	श्री परमालसिंहजी कुशवाह उपप्रधान – ग्वालियर संभाग आनंद नगर बिरला नगर, रविन्द्र विद्यालय के पास, गवालियर (म.प्र.) मो. 9165208198
श्री रामपालजी सोनी उपप्रधान – गुना संभाग खेड़ापती कालोनी, झांसी रोड़ शिवपुरी जिला शिवपुरी (म.प्र) मो. 9029377266	श्री मानसिंगजी यादव उपप्रधान – चंबल संभाग आर्य समाज मानमन्दिर बार्ड 14, गोरमी जिला भिण्ड मोबा. 8878447400
श्री दिनेश जी वाजपेयी उपप्रधान – भोपाल संभाग 3, विद्या विहार कॉलोनी, अहमदपुर रोड विदिशा –464001 मो. 9425162850	श्री बंशीलालजी आर्य उपप्रधान – रतलाम संभाग मु. पो. बरखेडापंथ,जिला मन्दसौर (म.प्र) मो. 9826720164
श्री लक्ष्मीनारायण आर्य उपप्रधान – उज्जैन संभाग ग्राम व पोस्ट विकमपुर मौलाना, तह. बड़नगर उज्जैन (म.प्र.) मो. 9827078880	श्री गोविन्दजी आर्य उपप्रधान – इन्दौर संभाग देपालपुर, जिला इन्दौर (म.प्र.) मो. 9424012471
श्री जैमिनीजी गोयल उपमन्त्री – ग्वालियर संभाग आर्य समाज मन्दिर चित्रगुप्तगंज 19, रामबाग कांलोनी, ग्वालियर (म. प्र.) मो. 9893051539	आचार्य घनश्यामजी उपमन्त्री – चम्बल संभाग आर्य समाज, मुरैना मो. 9425615976

www.thearyasamaj.org

श्री रामवीरजी शर्मा उपमन्त्री – गुना संभाग पं. आटा चक्की नया बस स्टेण्ड, चन्देरी रोड, अशोक नगर मो. 9977186388	श्री ओमप्रकाश आर्य उपमन्त्री – भोपाल संभाग वार्ड 12, मेन बाजार, कुरवाई जिला विदिशा (म. प्र.) मो. 9993172309
श्री राजेन्द्रबाबू जी गुप्ता उपमन्त्री – रतलाम संभाग आर्य समाज, रतलाम (म. प्र.)	श्री दरबारसिंहजी आर्य उपमंत्री – उज्जैन संभाग कानड़, जिला – आगर (म.प्र.) मो. 9893605244
श्री दक्षदेवजी गौड़ उपमंत्री – इन्दौर संभाग 89, इमली बाजार, इन्दौर (म.प्र.) मो. 9425910015	डॉ. जयपालसिंहजी अन्तरंग सदस्य : म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा 1/57, साकेत ओमनी मिलयम एडवोकेट कॉलोनी, अम्बाह मो. 9425418962
श्री विजयप्रकाशजी गोयल अन्तरंग सदस्य : म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा 2 अग्रबिहार, 16 पार्क रोड़ वल्लभ नगर, इन्दौर (म.प्र.) मो. 9827024454	श्री समीरजी गांधी अन्तरंग सदस्य – म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा गांधी पेट्रोल पम्प, मेन रोड, शिवपुरी जिला शिवपुरी (म.प्र.)
श्री श्रीधरजी शर्मा उपमंत्री – गुना संभाग मार्डन स्कूल के पीछे, सोनी कांलोनी, गुना (म.प्र.) पिन. 473001 मो. 9425746595	श्री दलवीरसिंहजी राघव अन्तरंग सदस्य – म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा एल आई 85, हर्षवर्धन नगर, भोपाल पिन–462003 मोबा. 09425303577
श्री बाबूलालजी सोनी अन्तरंग सदस्य – म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य समाज कुरावर सीहोर (म. प्र.)	श्री मनोजजी स्वर्णकार अन्तरंग सदस्य – म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा शुभम् विद्या मन्दिर ग्वाल मोहल्ला, नीमच (म.प्र.) मो. 8085077030
श्री फूलसिंह जी यादव अन्तरंग सदस्य – म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा 97, पटेल नगर, मण्डीदीप जिला–रायसेन (म. प्र.) मो. 9425004379	श्री श्वेतकेतुजी वैदिक अन्तरंग सदस्य – म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा वैदिक सदन, विष्णुपुरी के सामने ए. बी. रोड, भंवरकुंआ चौराहे के पास, इन्दौर (म. प्र.) मोबा. 9425058033

www.thearyasamaj.org

श्री मोहनलालजी आर्य अन्तरंग सदस्य – म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा सरंगपुर रोड, कानड जिला आगर (म.प्र.) मोबा. 9424075157	श्री ओमप्रकाशजी आर्य अन्तरंग सदस्य – म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा बोरखेड़ी रोड, वेटनरी कॉलेज के पीछे महू (म. प्र.) मोबा. 9229444340
श्री ललितजी नागर अन्तरंग सदस्य – म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य समाज मन्दिर, नई सड़क उज्जैन (म.प्र.) मोबा.	श्री प्रेमनारायणजी पाटीदार अन्तरंग सदस्य – म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा 4, कमला नगर, देवास (म.प्र.) मो. 9926875022
श्री जगन्नाथसिंह जी अन्तरंग सदस्य – म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा 153,शेरपुरा, महक ऑक्सपोर्ड के सामने विदिशा –464001 मो. 9425641437	श्री ओमप्रकाशजी भदोरिया अन्तरंग सदस्य – म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य समाज, डबरा जिला ग्वालियर (म.प्र.) मो.
श्री सुदामामुनिजी विशेष आमन्त्रित सदस्य – म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य समाज, मोहनपुरा, गोरमी, जिला–भिण्ड (म.प्र.) मो. 9977125293	श्री जानकी मोहनजी जौहरी विशेष आमंन्त्रित – म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा 150, आराधना नगर कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र) मो. 9425025479
श्री महेश शर्मा विशेष आमन्त्रित सदस्य – म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा 102 बी राधाकृष्ण अपार्टमेन्ट होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)	श्री कमलेशजी याज्ञिक विशेष आमन्त्रित सदस्य – म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा इन्दौर रोड़ टेलीफोन कांलोनी के पास इंगलिशपुरा, सिहोर (म.प्र.) पिन. 466001 मो. 9977464985
श्री गोपालजी अग्रवाल विशेष आमन्त्रित सदस्य – म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य समाज, ब्यावरा मो.	श्री रामकिशोर कासदे विशेष आमन्त्रित सदस्य – म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य समाज, विदिशा (म. प्र.) मो.

www.thearyasamaj.org

श्री हितेष हरियाणी विशेष आमन्त्रित सदस्य – म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा जल मन्दिर रोड, शिवपुरी (म. प्र.) मो.	श्री राजवीरसिंह चौहान विशेष आमन्त्रित सदस्य – म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा 166, भगतसिंह नगर, भिण्ड रोड, ग्वालियर (म. प्र.) मो. 9425307300
श्री राधेश्यामजी बियाणी विशेष आमन्त्रित सदस्य – म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा बं. नं. 100, बियाणी कम्पाउण्ड आर्य समाज स्कूल के सामने, महू (म. प्र.) 453441 मोबा. 9826298362	श्री वेदरत्नजी आर्य विशेष आमन्त्रित सदस्य – म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य समाज मन्दिर,संयोगितागंज, इन्दौर मो.
श्री विनोदजी अहलुवालिया विशेष आमन्त्रित सदस्य – म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा ए–1, मेन रोड, राजेन्द्र नगर, इन्दौर मो. 9926993099	श्रीमती सरीताजी आर्या विशेष आमन्त्रित सदस्या – म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य समाज मन्दिर, देपालपुर जिला इन्दौर (म. प्र.) मो.
श्री डालूरामजी आर्य विशेष आमन्त्रित सदस्य – म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य समाज मन्दिर नान्दरा तह. महेश्वर जिला. खरगौन (म.प्र) मो. 9617189192	श्री रमेशचन्द्रजी गोयल मनोनीत सदस्य – म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा 6, व्हाईट चर्च कॉलोनी, इन्दौर मो. 9098272064
श्री राजेन्द्रजी व्यास मनोनीत सदस्य – म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा 41, शिवाजी पार्क कोठी रोड़ उज्जैन (म.प्र.) मो. 9425430915	श्री भगवानदास जी अग्रवाल मनोनीत सदस्य – म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा एल 86,''सुखदा''जवाहन नगर, रतलाम (म.प्र.) मो. 8989467396
श्री शेखर आर्य अन्तरंग सदस्य : म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा 31,दयानन्दगली, सैलाना जि.–रतलाम (म.प्र.) मो. 9584226550	

इसके अतिरिक्त विभिन्न कार्यों व योजना के अन्तर्गत विभिन्न समितियों का भी गठन किया गया है, वह आगामी अंक में प्रकाशित किया जावेगा।

श्री अग्रवाल जी को पुत्र शोक

आर्य नेता श्री भगवानदासजी अग्रवाल के सुपुत्र श्री सुभाष जी अग्रवाल का आकस्मिक देहान्त हो गया। उनके शान्ति यज्ञ का कार्य दिनांक 21/12/2016 को रतलाम में रखा गया था। इस अवसर पर बड़ी संख्या में नगर के नागरिकों की उपस्थिति हुई। मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री प्रकाशजी आर्य सहित श्री वेदप्रकाश आर्य, श्री रमेशचन्द्र गोयल, श्री दक्षदेव गौड़ आदि प्रदेश के अनेक पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं ने उपस्थित होकर श्रद्धांजलि दी।

www.thearyasamaj.org

मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 1 लाख रूपए की राशि भेंट

आर्य समाज नेपाल हेतु 1 लाख रूपए की राशि मध्य भारतीय सभा द्वारा पहुंचाई गई, जिसमें आर्य समाज शिवपुरी 21,000 एवं आर्य समाज विदिशा द्वारा 21,000 रूपए की राशि प्रदान की गई तथा शेष राशि मध्य भारतीय सभा द्वारा दी गई।

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशक पं. सुरेशचन्द्र शास्त्री द्वारा वेद प्रचार

1. 4/12/2016 से 6/12/2016 तक आर्य समाज मेहलुआ चौराहा कुरवाई जिला विदिशा में त्रिदिवसीय यज्ञ, प्रवचन
2. 8/12/2016 आर्य समाज शिवपुरी में प्रातः यज्ञ, प्रवचन
3. 9/12/2016 ग्राम रिजौदा जिला अशोक नगर स्थान राधाकृष्ण मन्दिर में रात्रिकालीन प्रवचन
4. 10/12/2016 से 12/12/2016 डॉ. गजेन्द्रसिंह यादव ग्राम पिपनावदा जिला अशोक नगर त्रिदिवसीय वेद प्रचार (यज्ञ, प्रवचन)
5. 11/12/2016 को आर्य समाज मन्दिर अशोक नगर में यज्ञ, प्रवचन (रविवारीय सत्संग)

सौजन्य से –श्री रामवीर आर्य, अशोक नगर

वेद प्रचार कार्यक्रम

0 आर्य समाज डबरा जिला ग्वालियर का 31 वॉ चार दिवसीय वार्षिकोत्सव दिनांक 26 से 29 दिसम्बर 2016 तक आयोजित किया गया है। कार्यक्रम में आमन्त्रित विद्वान आचार्य श्री सोमदेव जी नैष्ठिक ब्रह्मचारी (आर्ष गुरूकुल ऋषि उद्यान अजमेर, राजस्थान), श्री युगलकिशोर जी भजनोपदेशक (हरदोई उ. प्र.)।

0 आर्य समाल नान्द्रा का 23 वॉ. वार्षिकोत्सव दिनांक 1 जनवरी से 5 जनवरी 2017 तक। कार्यक्रम में आमन्त्रित विद्वान आचार्य हरिशंकर जी अग्निहोत्री, आगरा उ. प्र., सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सत्यपालजी 'सरल' देहरादून उत्तरांचल, श्री प्रकाश जी आर्य, मन्त्री सार्वदेशिक सभा, दिल्ली, श्री काशीरामजी अनल शाजापुर।

0 आर्य समाज बेरसिया में दिनांक 16 से 20 जनवरी 2017 तक। कार्यक्रम में आमन्त्रित विद्वान श्री सुमन जी, पं. महेन्द्रपाल आर्य, कलकत्ता, पं. सुरेशचन्द्र शास्त्री, महू, सुश्री अंजली आर्या, हरियाणा।

www.thearyasamaj.org

गुरूकुल होशंगाबाद का 105 वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक 9 से 11 दिसम्बर तक गुरूकुल होशंगाबाद का 105 वां वार्षिकोत्सव अभूतपूर्व उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ कार्यक्रम में भाग लेने हेतु भारतवर्ष के अनेक प्रान्तों से आर्य जन उपस्थित हुए। इस अवसर पर मध्यप्रदेश शासन के वन मंत्री श्री सूर्यप्रकाशजी मीणा, विधायक श्री विजयपालसिंह तथा सार्वदेशिक सभा के मंत्री श्री प्रकाशजी आर्य, श्री लक्ष्मीनारायणजी भार्गव, श्री जयनारायणजी आर्य, आर्य राधेश्यामजी बियाणी, साथ ही स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वामी शान्तानन्द जी, स्वामी अमृतानन्द जी, आचार्य आनन्द पुरूषार्थीजी, श्री दलवीर सिंह जी राघव, श्री दिनेशचन्द जी वाजपेयी, श्री जगन्नाथ सिंह जी, आचार्य सत्यसिन्धू जी संरक्षक स्वामी ऋतस्पति जी सहित बड़ी संख्या में आर्य जन उपस्थित थे।

उदबोधन देते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य, शान्तानन्दजी, लक्ष्मीनारायण जी भार्गव, स्वामी ऋतस्पतिजी, म. प्र. शासन के वनमन्त्री श्री सूर्यप्रकाश मीणा, विधायक श्री विजयपालसिंह आदि

कार्यक्रम समापन पर सार्वदेशिक सभा के मंत्री श्री प्रकाश आर्य का सारगर्भित ओजस्वी व्याख्यान हुआ। व्याख्यान के मध्य गुरूकुल परम्परा का महत्व व इतिहास बताते हुए वर्तमान में गुरूकुल की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। वर्तमान समय में संस्कार, संस्कृति और राष्ट्ररक्षा के लिए किस प्रकार गुरूकुल शिक्षा की आवश्यक है इस पर तथ्य पूर्ण विचार रखे इस उदबोधन के मध्य अपार जन समूह बार–बार करतल ध्वनी से उदबोधन का स्वागत करता रहा।

अपने ऊर्जावान उदबोधन में आपने बताया कि गुरूकुल की रक्षा व्यवस्था और उन्नति करना प्रत्येक सनातन धर्मी का नैतिक कर्तव्य हैं। हम अपने बच्चों को इस प्रकार की सस्थाओं में भेजे यह तो श्रेष्ठ है ही यदि न भेज पा रहे हैं तो गुरूकुल में जो शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं उनकी व्यवस्था करके सहयोगी बनना चाहिए। इस हेतु सभी को खुले हस्थ से दान देकर गुरूकुल संचालको को आर्थिक चिन्ता से मुक्त कर देना चाहिए। इसके साथ ही आपने महू के 4 व्यक्तियों से श्री आर्य राधेश्याम बियाणी, श्री रवि आर्य एडवोकेट, श्री ऋषि आर्य एडवोकेट (दोनों आपके पुत्र हैं) एवं श्री

www.thearyasamaj.org

ओमप्रकाश आर्य द्वारा वार्षिक सहयोग निरतंर देने की घोषणा की। सभा प्रधान इन्द्रप्रकाशजी गांधी, कोषाध्यक्ष व अन्य प्रमुख पदाधिकारियों से विचार कर व परामर्श से 51000/ इक्यावन हजार वार्षिक सहायता करने की घोषणा की।

सभा की ओर से 51,000/– रूपये की राशि का चैक भेंट करते हुए सभामन्त्री श्री प्रकाश आर्य एवं कोषाध्यक्ष श्री अतुल वमा

इसके साथ ही गुरूकुल में एक नई विशाल यज्ञ शाला के निर्माण का प्रस्ताव रखा इस हेतु सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य से आपने यज्ञ शाला निर्माण हेतु सहयोग की चर्चा दूरभाष पर की। सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य ने इस हेतु स्वयम् सहयोग देने और दूसरो से भी सहयोग दिलवाने की घोषणा की जिसे श्री प्रकाश जी ने मंच से घोषित किया। इस घोषणा से उपस्थित जन समूह में भारी उत्साह की लहर दौड़ गई। इसके पश्चात गुरूकुल के सहयोग करने का एक सिलसिला प्रारंभ हो गया। 5100/, 11000/,21000/, 25000/, 51000/, 1,00,000/ रूपये वार्षिक सहयोग करने वालो की घोषणाएं होने लगी।

विधायक श्री विजयपालसिंहजी ने 1,00,000/ देने का तथा निरतंर गुरूकुल का सहयोगी बने रहने का आश्वासन दिया। मध्य प्रदेश शासन के वन मंत्री श्री सूर्यप्रकाश मीणा ने अपने सारगर्भित उदबोधन मे समाज व संस्कृति रक्षा का आधार गुरूकुल शिक्षा पद्धति को बताया। आपने कहा – सनातन धर्म की रक्षा का आधार गुरूकुल ही हो सकता है आज धर्म के नाम पर फैल रहे पाखण्ड को समाप्त करना है तो गुरूकुल पद्धति से शिक्षा दिलवाकर समाज को सत्य ज्ञान के निकट लाया जा सकता हैं।

अपने स्वयम् के निर्माण में पिता श्री सीताराम आर्य का श्रेय बताते हुए आर्य समाज को इस ऊंचाई तक पहुंचाने का श्रेय दिया यह संस्कार अपने पिता से प्राप्त हुए घर में 40 वर्षो से नित्य यज्ञ संध्या होती है, मै आज भी बिना यज्ञ किए घर से नहीं निकलता हूं।

मै अपनी ओर से प्रतिवर्ष 25000 और माननीय श्री शिवराजसिंह जी माननीय मुख्यमंत्री मध्य प्रदेश शासन द्वारा दी गई व्यवस्था के माध्यम से 5,00,000/– जन

www.thearyasamaj.org

कल्याण की ज्ञान वृद्धि हो जनता सत्य ज्ञान को समझ सके इस वाचनालय हेतु प्रदान करने की घोषणा करता हूं गुरूकुल के लिए सदा आगे भी तत्पर रहूंगा। मंत्रीजी की घोषणा का करतल ध्वनि से स्वागत किया और एवं उत्साह का वातावरण आपके उदबोधन से निर्मित हुआ।

संचालन सुयोग्य विद्वान वक्ता श्री योगेन्द्र शास्त्री द्वारा किया जा रहा था। इस अवसर पर श्री स्वामी श्रद्धानंद जी एवम् भजनोपदेशक श्री नरेशदत्त आर्य बिजनौर को गुरूकुल की ओर से प्रतिवर्ष दिए जाने वाले विद्वान व कार्यकर्ता को मानपत्र राशि, शॉल श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री
श्री प्रकाश आर्य पुस्तक का विमोचन करते हुए।

इस अवसर पर श्री सीताराम आर्य द्वारा रचित पुस्तक **"स्वाधीनता संग्राम की नींव"** का विमोचन सभा मंत्री श्री प्रकाश आर्य जो उसके सम्पादक भी है तथा आर्य विद्वानो द्वारा किया गया।

अन्त में गुरूकुल संवरक्षण स्वामी ऋतस्पतिजी द्वारा गुरूकुल परिवार की ओर से सभी का आभार माना और भविष्य में गुरूकुल को अधिक उन्नत करने का आश्वासन दिया।

अतुल वर्मा
कोषाध्यक्ष : म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल

पांच दिवसीय वेद प्रचार सम्पन्न

आर्य समाज राऊ द्वारा दिनांक 28 नवम्बर से 2 दिसम्बर तक 5 दिवसीय कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालुओं की उपस्थिति हुई।

कार्यक्रम में आमन्त्रित विद्वानों में श्री सुरेशचन्द्र आर्य, सुश्री अंजली आर्या, सभामन्त्री श्री प्रकाश आर्य उपस्थित रहे।

डॉ. दक्षदेव गौड़
उपमन्त्री इन्दौर संभाग

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

वेद परमात्मा का दिया हुआ सृष्टि का प्रथम पवित्र ज्ञान है, जो पूर्ण है सबके लिए है, सदा के लिए है, वही सनातन और धर्म का आधार है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर को मानने से पहले उसे जानना आवश्यक है, ईश्वर वही है जो-सच्चिदानन्दस्वरूप निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है, आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि की पवित्रता व विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मानवों) का परम धर्म है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य

...हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

सम्प्रदायों, मजहबों की स्थापना का आधार विभिन्न मानवीय विचार धाराएं हैं, इसलिए वे अनेक हैं। किन्तु धर्म उस एक परमात्मा का ज्ञान हैं, इसलिए सब मनुष्यों का धर्म भी एक है, वही सबको संगठित करता है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर एक है, उसके गुण-कर्म और स्वभाव अनेक है, इसलिए हम उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है, उसी का स्मरण करना चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा हमारा व्यक्तिगत धर्म है, किन्तु पूर्ण धर्म पालन तो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व धर्म के पालन से होता है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

आर्य समाज

www.thearyasamaj.org

मानव कल्याणार्थ

आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-17

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

AMIT # 98262-7106

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा कौशल प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित कराकर
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक – प्रकाश आर्य, महू